Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 34

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

24 अगस्त 2017 ई. 1 ज़िलहिज्जा 1438 हिजरी कमरी

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

मैं ख़ुदा तआला की कसम खाकर कहता हूँ कि इन इलहामात पर उसी तरह ईमान लाता हूँ जैसा कि कुरआन शरीफ और ख़ुदा की दूसरी किताबों में और जिस तरह कुरआन शरीफ को सुनिश्चित और क़तई तौर पर ख़ुदा का वचन जानता हूँ इसी तरह इस वचन को भी जो मेरे पर नाज़िल होता है ख़ुदा का वचन विश्वास करता हूँ क्योंकि इसके साथ दिव्य चमक और नूर देखता हूँ और उसके साथ ख़ुदा की कदरतों के नमूने पाता हूँ।

(उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

22 बाईसवां निशान यह है कि जैसा कि मैं अभी लिख चुका हूँ जब मुझे यह खबर दी गई कि मेरे पिताजी सूर्यास्त होने के बाद वफात पा जाएंगे तो मानव होने के कारण मुझे इस ख़बर के सुनने से दर्द पहुंचा और चूँकि हमारी अधिकतर आजीविका का साधन उन्हीं के जीवन से जुड़े थे और वे अंग्रेज़ी सरकार से पेंशन पाते थे और साथ ही एक बड़ी रकम पुरस्कार पाते थे जो उनकी जीवन के साथ जुड़ी थी इसलिए यह विचार गुज़रा कि उनकी मृत्यु के बाद क्या होगा और दिल में डर पैदा हुआ कि शायद तंगी और असुविधा के दिन हम पर आएंगे और यह सारा विचार बिजली की चमक की तरह एक सैकंड से भी कम समय में दिल में गुज़र गया तब तभी तन्द्रा होकर यह दूसरा इल्हाम हुआ اَلَیۡسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبۡدَہٗ अर्थात क्या ख़ुदा अपने बन्दा के लिए पर्याप्त नहीं है।

इस इल्हाम इलाही के साथ ऐसा दिल मज़बूत हो गया कि जैसे एक कठोर दर्दनाक घाव किसी मरहम से एकदम अच्छा हो जाता है। वास्तव में यह बात बार बार आज़माई गई है कि अल्लाह तआला की वह्यी में दिल को तसल्ली देने के लिए एक निजी गुण है और जड़ इस गुण का वह विश्वास है कि अल्लाह तआला की वह्यी में होता है। खेद इन लोगों के कैसे इल्हाम हैं कि बावजूद इल्हाम का दावा के यह भी कहते हैं कि यह हमारे इल्हाम ज़न्नी (काल्पनिक) मामले हैं न मालूम यह शैतानी हैं या रहमानी ऐसे इल्हामों का नुकसान उनके लाभ से अधिक है लेकिन मैं ख़ुदा तआला की कसम खाकर कहता हूँ कि इन इलहामात पर उसी तरह ईमान लाता हूँ जैसा कि कुरआन शरीफ और ख़ुदा की दूसरी किताबों में और जिस तरह कुरआन शरीफ को सुनिश्चित और क़तई तौर पर ख़ुदा का वचन जानता हूँ इसी तरह इस वचन को भी जो मेरे पर नाज़िल होता है ख़ुदा का वचन विश्वास करता हूँ क्योंकि इसके साथ दिव्य चमक और नूर देखता हूँ और उसके साथ ख़ुदा की कदरतों के नमूने पाता हूँ। अत: जब मुझे यह इल्हाम हुआ कि اَلَیۡسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبۡدَہٗ तो मैं ने उसी समय समझ लिया कि ख़ुदा मुझे बर्बाद नहीं करेगा तब मैंने एक हिन्दू खत्री मलावा मल नामक जो कादियान का निवासी और अब तक जीवित है वह इल्हाम लिखकर दिया और पूरा किस्सा यह सुनाया और उसे अमृतसर भेजा कि ताकि हकीम मौलवी मुहम्मद शरीफ कलानौरी के द्वारा उसे किसी नगीना में खुद्वा कर और मुहर बनवा कर ले आए और मैंने इस हिन्दू को इस काम के लिए केवल इस उद्देश्य के लिए अधिकृत किया कि ताकि वह इस भव्य भविष्यवाणी के गवाह हो और ताकि मौलवी मुहम्मद शरीफ भी गवाह हो जाए। इसलिए मौलवी साहिब महोदय के माध्यम से वह अंगूठी पांच रूपए खर्च पर तय्यार होकर मेरे पास पहुंच गई जो अब तक मेरे पास मौजूद है ... यह उस समय में इल्हान हुआ था जबकि हमारे आर्थिक और विश्राम का सारा भरोसा हमारे पिताजी की बस एक लघु आय पर निर्भर थी और बाहरी लोगों में से एक व्यक्ति भी मुझे नहीं जानता था और मैं एक गुमनाम व्यक्ति था जो कादियान जैसे वीरान गांव में गुमनामी में पड़ा हुआ था। फिर इस के बाद ख़ुदा ने अपनी भविष्यवाणी के अनुसार एक दुनिया को मेरी तरफ लौटा दिया और ऐसी निरन्तर जीत से वित्तीय मदद की जिसका शुक्रिय वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं मुझे अपनी हालत पर विचार करके इस कदर भी उम्मीद न थी कि दस रुपया माहवार भी आएंगे लेकिन ख़ुदा तआला जो गरीबों को धूल से उठाता और अहंकारियों को धूल में मिलाता है उसी ने ऐसी मेरी सहायता की कि मैं वास्तव में कह सकता हूँ कि अब तक तीन लाख के करीब रुपया आता है और शायद इससे अधिक हो और आय इससे अधिक विचार कर लेना चाहिए कि कई सालों से केवल लंगर ख़ाना का डेढ़ हजार रुपया माहवार तक खर्च हो जाता है अर्थात औसत के हिसाब से और दूसरी शाखें खर्च की अर्थात मदरसा आदि और किताबों की छपवाई इससे अलग है। अत: देखना चाहिए कि यह भविष्यवाणी अर्थात اَلَیۡسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبۡدَہٗ किस सफाई और शक्ति और शान से पूरी हुई। क्या यह किसी मुफ़्तरी (झूठ बोलने वाले) का काम या शैतानी शंकाएं हैं। हरगिज़ नहीं। बल्कि यह ख़ुदा का काम है जिसके हाथ में सम्मान और अपमान और पतन और उन्नति है। अगर इस मेरे बयान का भरोसा न हो तो बीस वर्ष की डाक अधिकारिक रजिस्ट्रों को देखो इतना मालूम हो कि कितनी आय का दरवाजा इस सभी अवधि में खोला गया है, हालांकि यह आय केवल डाक द्वारा सीमित नहीं रही बल्कि हज़ार रुपया की आय ऐसे ही होती है कि लोग ख़ुद कादियान में आकर देते हैं और साथ ही ऐसी आय जो लिफाफा में नोट भेजे जाते हैं।

(हक़ीक़तुल वह्यी, पृष्ठ 115 -118, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 22, पृष्ठ 219-221)

☆ ☆ ☆

123 वां

जलसा सालाना क़ादियान

दिनांक 29, 30, 31 दिसम्बर 2017 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 123 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 29, 30 और 31 दिसम्बर 2017 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

आप का काम इस्लाम और अहमदियत की शिक्षाओं से सारी दुनिया को सूचित करना है। इसके लिए आवश्यक है कि आप की धार्मिक जानकारी व्यापक हों। अपनी आस्थाओं से बखूबी परिचित हों और इस्लामी शिक्षाओं की पाबन्दी करती हों। जैसे हयावाले कपड़े पहनें। कोट और बुर्के की उम्र हो तो इसके बिना घर से बाहर न निकलें। बेहूदा मजलिसों, आचरण से गिरी हुई दोस्तियों और इंटरनेट और मोबाइल फोन आदि बुराइयों से खुद को बचाकर रखें।

नासरात की उम्र शिक्षा की उम्र है। अपनी शिक्षा पर विशेष ध्यान दें और बेहतर भविष्य के लिए कड़ी मेहनत और दुआओं से काम लें। आप व्यस्तता ऐसी बनाएँ जिनसे आपकी धर्म से प्रेम प्रकट होता है।

हर जुम्अः को जब मेरा ख़ुत्बा एम.टी.ए पर प्रसारित हो तो उसे सुनने की व्यवस्था करें। कुछ बातें साथ साथ नोट भी करें ताकि पूरा ध्यान ख़ुत्बा की तरफ केंद्रित रहे।

नासरातुल अहमदिया जर्मनी के त्रिमासिक पत्रिका "गुलदस्ता" के आरम्भ पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्त्रेहेल अज़ीज़ का विशेष सन्देश

लंदन

20-03-17

प्यारी नासरातुल अहमदिया जर्मनी

अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुहू

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई है कि आप को तिमाही पत्रिका "गुलदस्ता" के रिलीज़ की तौफ़ीक़ मिल रही है। अल्लाह इसे हर लिहाज से बरकत वाला बनाए। आमीन।

इसके लिए अदरणीया सदर साहिबा लजना ने मुझे संदेश भिजवाने का अनुरोध किया है। मेरा संदेश है कि उप संगठनों की स्थापना, खिलाफत अहमदिया की बरकतों में से एक महान बरकत है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला ने इनका आरम्भ किया था कि जमाअत के हर वर्ग के लोग धर्म की सेवा के कामों में योगदान कर सकें और विभिन्न तरीके से अपनी क्षमताओं को उभारने और अपनी धार्मिक पहचान बनाने के अवसर पा सकें। लजना इमा अल्लाह भी जमाअत के उप संगठनों में से एक है जिस की आगे एक शाखा नासरातुल अहमदया कहलाती है जो पंद्रह साल तक की अहमदी बच्चियों का संगठन है। अतः आप ख़ुदा के फज़ल से जमाअत का स्थिर और सक्रिय हिस्सा हैं जिसका काम इस्लाम और अहमदियत की शिक्षाओं से सारी दुनिया को सूचित करना है। इसके लिए आवश्यक है कि आप की धार्मिक जानकारी व्यापक हों। अपनी आस्थाओं से बखूबी परिचित हों और इस्लामी शिक्षाओं की पाबन्दी करती हों। जैसे हयावाले कपड़े पहनें। कोट और बुर्के की उम्र हो तो इसके बिना घर से बाहर न निकलें। बेहूदा मजलिसों, आचरण से गिरी हुई दोस्तियों और इंटरनेट तथा मोबाइल फोन आदि बुराइयों से ख़ुद को बचाकर रखें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक "कश्ती नूह " में बुरे दोस्त और ख़राब सभाओं को न छोड़ने वालों को बड़ा कठोर डराया है। अतः इस शिक्षा को हमेशा याद रखें। नासरात की उम्र शिक्षा की उम्र है। अपनी शिक्षा पर विशेष ध्यान दें और बेहतर भविष्य के लिए कड़ी मेहनत और दुआओं से काम लें। आप व्यस्तता ऐसी बनाएँ जिनसे आपकी धर्म से प्रेम प्रकट होता है। जैसे हर जुम्अः को जब मेरा ख़ुत्बा एम.टी.ए पर प्रसारित हो तो उसे सुनने की व्यवस्था करें। कुछ बातें साथ साथ नोट भी करें ताकि पूरा ध्यान ख़ुत्बा की तरफ केंद्रित रहे। जिन बातों की समझ न आए घर में किसी बड़े से पूछ लें। इससे आप का समय के ख़लीफा के साथ व्यक्तिगत संबंध स्थापित हो जाएगा। धार्मिक ज्ञान बढ़ेगा। सोच और विचार शुद्ध हो जाएंगे और धर्म की सेवा और जमाअत के कार्यक्रमों में शामिल होने की भावना मज़बूत हो जाएगी। याद रखें कि आप जितना अपने आप को धर्म के निकट रखेंगी उतना ही सामाजिक बुराइयों से सुरक्षित रह सकेंगी। इसी से दिल का आराम होगा। तब्लीग़ करेंगी तो बात में असर होगा।

पत्रिका के प्रशासन को भी याद रखना चाहिए कि हर अंक में कुछ भाग कुरआन शरीफ और हदीसों पर आधारित हो। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उद्धरणों के अंश शामिल करें और कुछ पन्ने मेरे ख़ुत्बों के लिए विशिष्ट लें। ख़ुत्बों को सवाल और जवाब के रूप में भी प्रकाशित करें ताकि छोटी उम्र से हमारी अहमदी बच्चियों की खिलाफत से प्रतिबद्धता मज़बूत होती चली जाए। इसी तरह जानकारी बढ़ाने और ज्ञान के अनुसंधान का शौक उजागर करने के लिए मार्गदर्शन भी हो। नासरात से छोटे छोटे लेख और शिक्षाप्रद कहानियाँ लिखवा कर इन्हें भी पत्रिका का हिस्सा बनाएँ ताकि वे महसूस करें कि यह उनकी अपनी पत्रिका है और उन्हें इस के अध्ययन में विशेष रुचि है। अल्लाह आप को इसकी ताकत प्रदान करे। आमीन

वस्सलाम विनीत

मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस

☆ ☆ ☆

ख़ुत्बः जुमअः

जलसा के कार्यक्रमों भाषणों आदि के द्वारा जहां अहमदी आध्यात्मिकता में तरक्की करने की कोशिश करते हैं। सीखने के लिए आते हैं वहाँ जमाअत से बाहर के मेहमान और प्रैस ज्ञान वर्धक और आस्था की दृष्टि से हमारी शिक्षा को सुनने के साथ साथ सामान्य रूप में जलसा के परिवेश और अहमदी महिलाओं पुरुषों की स्वैच्छिक सेवा और आतिथ्य की भावना से उन्हें काम करता हुआ देखकर इस्लाम की सुन्दर शिक्षा का व्यावहारिक निरीक्षण भी कर लेते हैं और जैसा कि मैंने कहा कि यह बहुत बड़ा तब्लीग़ का माध्यम है। अत: स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं की एक बहुत बड़ी भूमिका है और कार्यकर्ता जहां और जिस स्थिति में भी काम कर रहे हैं उनका एक अपना महत्व है और इस महत्व को एक साधारण सहायक कार्यकर्ता से लेकर अफसर तक प्रत्येक को अपने सामने रखना चाहिए।

हमेशा याद रखना चाहिए कि आतिथ्य एक बहुत महत्वपूर्ण विभाग है और आतिथ्य केवल खाना खिलाने, पानी पिलाने या अधिकतम आवास की व्यवस्था कर देना ही नहीं है बल्कि जलसा सालाना हर विभाग ही आतिथ्य है चाहे इसे कोई नाम दिया गया हो। जलसा में जो भी आता है वह मेहमान है और उसकी ज़रूरतों का ख्याल अपने उपलब्ध संसाधनों के साथ रखना हर व्यक्ति का जो जलसा सालाना में किसी भी ड्यूटी पर निर्धारित है आवश्यक है।

आतिथ्य के उच्च मानक स्थापित करने के लिए प्रत्येक विभाग के अधिकारी अपनी स्थिति की समीक्षा करते रहें और विनम्रता और विनय को चरम तक पहुंचाने की कोशिश करें।

जो लोग अपने सोने आदि की व्यवस्था कर के आते हैं, कुछ लोग अपने तम्बू भी ले आते हैं उन्हें इस बात को सामने रखना चाहिए कि रात के लिए बिस्तरों का नियमित अच्छा प्रबंध हो।

जलसा सालाना में शामिल होने वाला हर व्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मेहमान है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मेहमान होने के कारण हम ने हर मेहमान को विशेष मेहमान समझना है और आतिथ्य में भरपूर कोशिश करनी है।

हर विभाग के अफसर को भी चाहिए कि अपने विभाग से संबंधित कमियों को देखने के लिए कुछ लोगों की ड्यूटी लगा दें जो अपने विभाग के कार्यों की कमी तथा अधिकता की समीक्षा करें।

शाम को अपने अफसर को रिपोर्ट दें। इससे जलसा के दौरान भी और अगले साल के जलसा में भी सुधार पैदा करने में मदद मिलेगी।

जलसा सालाना पर पधारने वाले मेहमानों की सेवा के सिलसिले में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों और हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अपदेशों के आलोक में कार्यकर्ताओं और रज़ाकारान को महत्वपूर्ण उपदेश।

आदरणीय सय्यद मुहम्मद अहमद साहिब पुत्र हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब रज़ि अल्लाह तआला और अदरणीया महमीदा बेगम साहिबा पत्नी आदरणीय चौधरी मुहम्मद सिद्दीक़ भट्टी साहिब की वफात, मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 21 जुलाई 2017 ई. स्थान -मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ.

जलसा सालाना यूके इंशा अल्लाह तआला अगले जुम्अ: से शुरू हो रहा है। अल्लाह तआला की कृपा से जलसा में शामिल होने के लिए अन्य देशों से मेहमानों का आगमन शुरू हो चुका है और ज्यों-ज्यों जलसे के दिन करीब आते जाएंगे करीब और दूर के देशों से मेहमानों के आगमन में वृद्धि होती चली जाएगी। इसी तरह ब्रिटेन के दूसरे शहरों से भी मेहमान आने शुरू हो जाएंगे।

जलसा के मेहमानों में अहमदियों के अतिरिक्त जो जलसा की बरकतों से लाभान्वित होने के लिए आते हैं अब ब्रिटेन के अतिरिक्त कुछ अन्य देशों से जमाअत के अतिरिक्त और अन्य मुस्लिम मेहमान भी तशरीफ़ लाते हैं जिनमें कुछ देशों के सरकारी प्रतिनिधि या सरकारी अफसर या पढ़ा लिखा वर्ग जो प्रभावशाली है वह शामिल होता है। इसी तरह प्रेस और मीडिया से संबंधित लोगों की संख्या में भी अब वृद्धि होनी शुरू हो गई है और ये सब आने वाले जो ग़ैर हैं ये बड़ी गहरी नज़र से हमारी सब चीज़ देखते हैं और आमतौर पर प्रभावित होते हैं और विशेष रूप से जब हमारे निज़ाम को देखते हैं जो सारा स्वयंसेवी प्रणाली है तो यह बात फिर तब्लीग़ के अन्य रास्ते खोलती है, अधिक परिचय होता है, अधिक अहमदियत के बारे में जानने की कोशिश करते हैं। अत: इन दिनों हमारे काम करने वाले वालन्टीयरज़ स्त्री-पुरूष, लड़के लड़कियां, बच्चे एक खामोश तब्लीग़ कर रहे होते हैं और प्रेस द्वारा अहमदियत का परिचय दुनिया के चारों तरफ बड़ा व्यापक रूप से फैलता है। अब जबकि प्रेस का ध्यान आम दिनों में भी कभी कभी कुछ घटनाओं के कारण जमाअत की तरफ हो रहा है जैसे यहाँ यूरोप में कुछ आतंकवादी घटनाओं के बाद जमाअत के लोगों ने जिन में महिलाएं भी शामिल थीं, पुरुष भी शामिल थे, जिन्होंने इन घटनाओं के बाद इस्लाम का सही संदेश दुनिया को देने की कोशिश की और हमारे प्रेस विभाग ने भी इसमें बड़ी भूमिका निभाई, हमारे मुरब्बियों के भी बड़े इन्ट्रवियू आते रहे। जमाअत को इस्लाम की शांतिप्रिय शिक्षा को लेकर दुनिया की प्रेस ने दुनिया में व्यापक रूप से परिचित किया है। ज्यों-ज्यों ये घटनाएं बढ़ रहे हैं जमाअत का परिचय भी अधिक बढ़ रहा है। अत: बहरहाल जलसा के दिनों में भी अल्लाह तआला इस माध्यम से अर्थात जलसा के द्वारा इस्लाम का परिचय करवाने के व्यापक सामान उपलब्ध करा रहा है।

जलसा के कार्यक्रमों भाषणों आदि के द्वारा जहां अहमदी आध्यात्मिकता में

तरक्की करने की कोशिश करते हैं। सीखने के लिए आते हैं वहाँ जमाअत से बाहर के मेहमान और प्रैस ज्ञान वर्धक और आस्था की दृष्टि से हमारी शिक्षा को सुनने के साथ साथ सामान्य रूप में जलसा के परिवेश और अहमदी महिलाओं पुरुषों की स्वैच्छिक सेवा और आतिथ्य की भावना से उन्हें काम करता हुआ देखकर इस्लाम की सुन्दर शिक्षा का व्यावहारिक निरीक्षण भी कर लेते हैं और जैसा कि मैंने कहा कि यह बहुत बड़ा तब्लीग़ का माध्यम है। अत: स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं की एक बहुत बड़ी भूमिका है और कार्यकर्ता जहां और जिस स्थिति में भी काम कर रहे हैं उनका एक अपना महत्व है और इस महत्व को एक साधारण सहायक कार्यकर्ता से लेकर अफसर तक प्रत्येक को अपने सामने रखना चाहिए। एक साधारण सहायक कार्यकर्ता चाहे छोटा सा पानी पिलाने वाला बच्चा ही हो उसका व्यवहार और एक लगन से बे नफ्स होकर काम करना जहां उसे अल्लाह तआला की ख़ुशी के पाने वाला बना रहा होता है वहाँ दूसरों को भी प्रभावित कर रहा है जिस का जलसा में शामिल होने वाले मेहमान अभिव्यक्ति भी करते हैं।

इसी तरह सहायकों के अलावा अफसर जो हैं उन्हें भी याद रखना चाहिए कि केवल अपने कार्यकर्ताओं और सहायकों को ही सेवा करने वाला समझ कर उनसे काम न लें बल्कि ख़ुद भी विनम्रता के साथ एक सहायक और एक साधारण कार्यकर्ता की तरह काम करने की कोशिश करें। अपने कार्यकर्ताओं और अन्य लोगों से भी मेहमानों से भी अपने व्यवहार नरम और सहयोग करने वाले रखें। चेहरे पर विनम्रता और सहजता का भाव दिखाई देते हों। भाषा में नरमी और नैतिकता की उच्च अभिव्यक्ति के मानक स्थापित हो रहे हों।

हमेशा याद रखना चाहिए कि आतिथ्य एक बहुत महत्वपूर्ण विभाग है और आतिथ्य केवल खिलाने, पानी पिलाने या अधिक से अधिक आवास की व्य-वस्था कर देना ही नहीं है बल्कि जलसा सालाना का हर विभाग ही आतिथ्य है चाहे इसे कोई नाम दिया गया हो। जलसा में जो भी आता है वह मेहमान है और उसकी जरूरतों का ख्याल अपने उपलब्ध संसाधनों के साथ रखना हर उस व्यक्ति का जो जलसा सालाना की किसी भी ड्यूटी पर निर्धारित है आव-श्यक है। इसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी भावनाओं को एक जगह व्यक्त किया जो कि हमारे लिए सैद्धांतिक मार्ग दर्शन है। आप अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फरमाया कि "मेरा हमेशा ध्यान रहता है कि किसी मेहमान को असुविधा न हो बल्कि उसके लिए हमेशा ताकीद करता रहता हूं कि जहां तक हो सके मेहमानों को आराम दिया जाए। " फरमाया कि "मेहमान दिल आईना के समान नाज़ुक होता है और ज़रा सी चोट लगने से टूट जाता है। ''

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 406, संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

अत: इस बात को हमें याद रखना चाहिए और अगर कई बार कोई ऐसे हालात पैदा हों तो अपनी तबीयतों पर दमन करके भी हमें मेहमान को आराम और सुविधा पहुंचाने की कोशिश करनी चाहिए और प्रत्येक विभाग के अधिकारियों से मैं कहूंगा कि अगर उनका रवैया नरम है, उनके आचरण अच्छे हैं, उनमें धैर्य की आदत है, उनमें अनुचित बात सुनने का भी हौसला बढ़ा हुआ है तो उनके प्रतिनिधि और सहायक भी ऐसे ही व्यवहार मेहमानों के साथ प्रकट करेंगे, उन्हें व्यक्त करेंगे और मेहमान के सत्कार के उत्कृष्ट नमूने स्थापित करेंगे। लेकिन अगर अधिकारियों के चेहरों पर सख्ती, बातों में कठोरता और बात को ध्यान से न सुनने और बर्दाश्त न करने की आदत है तो उनके प्रतिनिधि भी और सहायक भी वैसे ही व्यवहार दिखाने वाले होंगे। अत: आतिथ्य के उच्च मानक स्थापित करने के लिए प्रत्येक विभाग के अफसर अपनी स्थिति की समीक्षा करते रहें और विनम्रता और विनय को चरम तक पहुंचाने की कोशिश करें।

जैसा कि मैंने कहा कि एक दो विभाग ही आतिथ्य के अधीन नहीं आते बल्कि जलसा सालाना का हर विभाग है आतिथ्य विभाग है। चाहे वह आवास विभाग या खाना पकाने का विभाग हो या खाना खिलाने का प्रबंधन है या परिवहन की व्यवस्था है या सफाई और बाथरूम की व्यवस्था है या डॉक्टर और पैरा मैडिक्ल युक्त स्वास्थ्य निदेशालय या मार्गों का मार्गदर्शन करने वाले ख़ुद्दाम ड्यूटी पर या दूसरे लोग या सुरक्षा विभाग और उसके अलावा अन्य क्षेत्र, प्रत्येक अपने अपने क्षेत्र में मेजबान है।

आवास का प्रबंध करने वालों को याद रखना चाहिए कि सामूहिक निवासों में भी और टेंट में भी महिलाओं बच्चों की बैडिंग आदि का विशेष रूप से ध्यान रखें। बेशक आजकल गर्मियों के दिन हैं लेकिन रात मौसम एकदम ठन्डा हो सकता है और हदीकतुल महदी में जहां जलसा होना है इंशा अल्लाह तआला, लंदन की तुलना में वैसे भी चार-पांच डिग्री पारा कम रहता है इसलिए जो लोग अपने सोने आदि की व्यवस्था करके आते हैं, कुछ लोग अपने तम्बू भी ले आते हैं उन्हें इस बात को सामने रखना चाहिए कि रात के लिए बिस्तर के नियमित अच्छा प्रबंध हो।

पिछले साल का अनुभव यही है कि बच्चों वाले कई बार मौसम ठंडा होने के कारण रात को परेशान होते रहे।

इसी तरह खाना खिलाने वाले हैं जिनका सीधे मेहमानों से सम्बन्ध है उन्हें हमेशा याद करवाता हूं कि खाना देते हुए थाली में डालते हुए मेहमान की पसंद को भी देख लिया करें यद्यपि इसमें काफी दिक्कत और कठिनाई आती है लेकिन बहरहाल कोशिश करें जिस सीमा तक देख सकते हैं देखें और अगर कोई मजबूरी हो तो बजाय सख्ती से जवाब देने के उत्तम रंग में उसे जवाब दें, जिस से दूसरे की भावनाओं को चोट न हो।

इस साल जलसा के प्रबंध के अधीन जो भोजन की प्लेटें हैं वह भी बदली गई हैं। जो पहले प्लेट इस्तेमाल होती थीं उनके बारे कहा जाता है कि एक विशेष तापमान से अधिक खाना इन प्लेटों में नहीं देना चाहिए क्योंकि कुछ जहरीले रसायन इसमें से निकलते हैं और हमारा खाना तो बहुत गर्म होता है इसलिए अफसर जलसा सालाना ने मुझे इस साल प्रयुक्त होने वाली प्लेट्स दिखाई हैं वे विशेष प्रकार के कागज़ की होंगी इसलिए खाना डालने वाले जो लोग हैं वे भी ध्यान कि शायद पतली हों तो दो प्लेटें जोड़कर प्रयोग करें। भोजन वितरण करने वालों की भी इस बारे में जो जलसा सालाना का विभाग है उनका सही मार्गदर्शन होना चाहिए।

फिर परिवहन प्रणाली भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रणाली है और इस बार दूर पार्किंग के कारण अधिकांश शटल बसों का इंतजाम किया गया है और इसे भी जलसा सालाना की प्रणाली को अधिक से अधिक सक्रिय करना होगा ताकि लोग समय पर जलसा में पहुंच सकें और कारों पर आने वाले मेहमानों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि उनकी पार्किंग दूर हो सकती है और जलसा स्थल से काफी दूरी पर भी हो सकती है इसलिए समय का मार्जिन (Margin) रखकर अपना यात्रा शुरू करें। इसी तरह दूसरे विभाग हैं हर एक अपने काम के तरीके और अपने कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षिण मेहमानों को अधिक से अधिक सुविधा प्रदान करने की सोच के साथ करनी चाहिए।

ख़िदमते खलक और सुरक्षा के कार्यकर्ताओं को भी पहले से अधिक सतर्क होकर काम करना होगा जो दुनिया के आजकल के हालात हैं। साथ ही मेहमानों के आत्मसम्मान और भावनाओं का ख्याल रखते हुए यह सारा काम करना है। कार्ड चेक करने और दूसरी जाँच, स्कैनिंग आदि में पहले दिन से लेकर अंतिम दिन तक पूरा ध्यान देना होगा, पूरे ध्यान से जाँच करनी होगी और हर बार अगर कोई व्यक्ति बाहर जाता है तो अंदर आने पर जाँच करनी होगा। लेकिन यह भी ध्यान रखना है कि उन्हें किसी तरह इस तरह का एहसास न हो कि केवल उन्हीं पर नज़र है या कोई बुरा व्यवहार किया जा रहा है।

बहरहाल जलसा की व्यवस्था ऐसे व्यवस्था जो हम अस्थायी करते हैं और मुझे अच्छी तरह पता है कि जलसा की जो यह अस्थायी व्यवस्था है, अस्थायी व्यवस्था होने के कारण से त्रुटियों और कमियों से खाली नहीं हो सकती बल्कि स्थायी प्रबन्धों में भी कमियां और खामियां पैदा हो जाती हैं लेकिन हमें कोशश करनी चाहिए कि जिस हद तक हम अपनी क्षमताओं, ताकतों और संसाधनों का उपयोग कर मेहमानों को सुविधा पहुंचाने का प्रबंधन कर सकते हैं, करें।

जलसा सालाना पर शामिल होने वाला हर व्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का मेहमान है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमान होने के कारण हम ने हर मेहमान को विशेष मेहमान समझना है और आतिथ्य में भरपूर कोशिश करनी है यद्यपि कि जलसा सालाना के प्रबंध के अधीन एक विभाग ऐसा भी होता है जो निगरानी आदि का विभाग है जो विभिन्न क्षेत्रों का निरीक्षण भी करता है जिस के कार्यकर्ताओं विभागों की समीक्षा लेकर कमियों

और खामियों से अपने अफसर के माध्यम से जलसा सालाना की प्रणाली को ध्यान दिलाते हैं लेकिन हर विभाग के अफसर को भी चाहिए कि अपने विभाग से संबंधित कमियों को देखने के लिए कुछ लोगों कि ड्यूटी लगा दें जो अपने विभाग के कार्यों की कमी तथा अधिकता की समीक्षा कर के शाम को अपने अफसर को रिपोर्ट दें। इससे जलसा के दौरान भी और अगले साल के जलसा में भी सुधार करने में मदद मिलेगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने समीक्षा की तरफ ध्यान दिलाते हुए एक अवसर पर फरमाया था कि लंगर के निगरान को मेहमानों की जरूरतों की समीक्षा करते रहना चाहिए लेकिन क्योंकि वह अकेला आदमी है इसलिए कई बार ध्यान नहीं रहता। कई बातें नज़रों से औझल हो जाती हैं इसलिए दूसरा व्यक्ति याद दिला दे। (उद्धरित मल्फ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 220, संस्करण 1985 मुद्रित यू.के) और याद दिलाने के लिए सर्वश्रेष्ठ तरीका यही है कि अफसर ख़ुद किसी को यह याद दिलाने के लिए निर्धारित करे जो समीक्षा करते रहें कि कहां कहां कमी है।

अमीर ग़रीब का बराबर आतिथ्य होना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमारे मार्गदर्शन करने के लिए कुछ छोटी छोटी बातों से भी मार्गदर्शन भेजा है और बड़ी बारीकी से आतिथ्य तरीके समझाए हैं। इसलिए एक अवसर पर फरमाया कि "जो नए अपरिचित मनुष्य हैं " अर्थात आने वाले मेहमान जो पूरी तरह परिचय नहीं रखते, यहाँ भी कई नए मेहमान दूसरे देशों से आते हैं फरमाया कि " तो यह हमारा अधिकार है कि उनकी प्रत्येक ज़रूरत को ध्यान में रखें। " फरमाया कि " कई बार किसी को शौचालय का ही पता नहीं होता तो उसे सख्त तकलीफ होती है। इसलिए ज़रूरी है कि मेहमानों की जरूरतों का बड़ा ख्याल रखा जावे। " आपने फरमाया कि "जिन लोगों को ऐसे कार्यों के लिए कार्यवाहक निर्धारित किया है। यह उनका कर्तव्य है कि किसी प्रकार की शिकायत न होने दें। क्योंकि लोग सैंकड़ों और हज़ारों कोस का सफर तय करके ईमानदारी और श्रद्धा के साथ सच्चाई के अनुसंधान के लिए आते हैं। "

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 220, संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

यद्यपि यह बात आप ने ग़ैर लोगों के हवाले से भी वर्णन की है लेकिन अपनों को भी आतिथ्य और जलसा के आतिथ्य के बारे में भी ऐसे उपदेश मिलते हैं जहां आप ने बहुत ध्यान दिलाया है। और फिर जैसा कि मैंने कहा कि जमाअत के बाहर के मेहमान या प्रेस के प्रतिनिधि हमारे जलसा में शामिल होते हैं वे सामान्य व्यवहार की भी समीक्षा कर रहे होते हैं। अत: हर विभाग कार्यकर्ता को आचरण की गुणवत्ता बहुत व्यापक होना चाहिए।

फिर एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि "मेरे नियम के अनुसार अगर कोई मेहमान आए और गाली और गलौच तक भी नौबत आ जाए तो उसे सहन कर लेना चाहिए। "

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 5, पृष्ठ 91 , संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

अत: मेहमान के सख्त रवैया को भी सहन करना चाहिए चाहे वह ग़ैर हैं या अपने। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आतिथ्य की गुणवत्ता का उल्लेख लिखने वाले ने इस तरह एक बार उल्लेख लिखा है कि " आला हज़रत हज़रत हुज्जतुलल्लाह मसीहा मौऊद अलैहिस्सलाम आतिथ्य का रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरह उच्च और जीवित नमूना हैं।" यह लिखते हैं कि "जिन लोगों को अधिकतर आप की सोहबत में रहने का मौक़ा मिला है वह जानते हैं कि किसी मेहमान को (चाहे वह सिलसिला में प्रवेश कर या न करे) अर्थात अहमदी है या नहीं " ज़रा सी भी परेशानी व्याकुल कर देती है। " लिखते हैं कि " श्रद्धालु मित्रों के लिए तो और भी आप की रूह में उत्साह और स्नेह होता है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 101, संस्करण 1985 मुद्रित यू.के)

जो अहमदी हैं, श्रद्धालु हैं उनके लिए बड़ा उत्साह और करूणा होती है। अत: यह उत्साह और करूणा हमें जलसा में आने वाले मेहमानों के लिए अधिक से अधकि दिखानी चाहिए।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेहमान के महत्व और सम्मान के बारे में हमें क्या फरमाया है? इस बारे में एक रिवायत में आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला और आख़िरत के दिन पर ईमान लाने के लिए तीन बातों का करना ज़रूरी है। यह कि अच्छी बात कहो या चुप रहो। अपने पड़ोस का सम्मान करो और तीसरे कि अपने मेहमान का सम्मान करो। (सही मुस्लिम किताबुल ईमान हदीस 173) अत: मेहमान का सम्मान भी अल्लाह और आख़िरत पर ईमान की शर्तों में से एक शर्त है। इसके अलावा और कई शर्तें हैं। या हम कह सकते हैं कि एक मोमिन के ईमान की उच्च गुणवत्ता के लिए आतिथ्य भी एक शर्त है।

आतिथ्य के संदर्भ में यह भी बता दूं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेहमान की धार्मिक स्थिति के सुधार और प्रशिक्षण का भी विचार किया करते थे। इसलिए एक रिवायत में आता है कि आप आए मेहमानों को खाना आदि खिलाने के बाद उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार मस्जिद में सोने के लिए भेज दिया और फिर सुबह फज्र की नमाज़ के लिए सबको जगाया। (मुस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 5, पृष्ठ 351 से 352 हदीस 15628 मुद्रित आलमुल कुतुब बैरूत 1998 ई) तो जलसा में जो प्रशिक्षण विभाग है वह भी इसलिए स्थापित किया गया है कि मेहमानों को नमाज़ के लिए भी ध्यान दिलाना रहें और फज्र और तहज्जुद के लिए जगाएं लेकिन नरमी और प्यार से। बहरहाल यह कुछ बातें थीं जो मेहमानों को लेकर मैंने कहीं। अल्लाह तआला सब कार्यकर्ताओं को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के महमानों की उत्तम रंग में सेवा करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

नमाज़ के बाद दो जनाज़े ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला है आदरणीय सय्यद मुहम्मद अहमद साहिब पुत्र हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो जो 13 जुलाई करीब 92 साल की उम्र में लाहौर में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब के सब से बड़े बेटे थे और इस तरह हज़रत उम्मे मोमिनीन, अम्मीजान आप की फूफी थीं। आप की शादी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब की छोटी बेटी से हुई। इस तरह आप उन के सबसे छोटे दामाद भी थे। हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब ने दो शादियां की थीं। पहली शादी हज़रत शौकत सुल्तान साहिबा के साथ थी जो 1906 ई में हुई थी उनसे कोई औलाद नहीं हुई और उनकी दूसरी शादी अमतुल लतीफ बेगम साहिबा से 1917 ई में हुई जो हज़रत मिर्ज़ा मुहम्मद शफी साहिब देहलवी मुहासिब सदर अंजुमन अहमदिया की बेटी थीं। उनसे अल्लाह तआला की कृपा से उनके सात बेटियां और तीन पुत्र पैदा हुए। (उद्धरित हज़रत मीर मुहम्मद इस्माइल रज़ि अल्लाह तआला अन्हों सैयद हमीदुल्लाह नुसरत पाशा, पृष्ठ 94, प्रकाशन द्वितीय 2009 ई कादियान) मीर मुहम्मद अहमद साहिब ने कादियान से 1939 ई में मैट्रिक की परीक्षा पास की और फिर गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से बी.एस.सी की परीक्षा पास की। फिर आप 1943 ई में रॉयल इंडियन एयर फोर्स में बतौर फ्लाइट कैडेट शामिल हो गए। आप की बेगम आदरणीया अमतुल लतीफ साहिबा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब की बेटी हैं और उनके तीन बेटे और एक बेटी हैं। एक बेटे हाशिम अकबर साहिब यहाँ हमारे हारटले पूल के सदर जमाअत भी हैं और एक बेटी डॉक्टर आयशा हैं। यह अमेरिका में हैं। द्वितीय विश्व युद्ध के विषय में उन्होंने ख़ुद भी एक बार अपने हालात लिखे थे। 1943 में फ्लाइट कैडेट भर्ती हुए और द्वित्तीय युद्ध में लड़ाकू पायलट के रूप से ब्रिटेन की तरफ से युद्ध में शामिल हुए। युद्ध के दौरान बर्मा फ्रंट पर 1945 ई में आप के जहाज़ को एक बार दुर्घटना लैंडिंग भी करनी पड़ी। विमान नष्ट हो गया लेकिन आप चमत्कारिक ढंग से सुरक्षित रहे। फिर 1947 ई में आप का स्थानान्तरण नागरिक उड्डयन विभाग में हो गया। भारतीय राष्ट्रीय एयरबेस फ्लाइंग ड्यूटी निभाते रहे और इस समय 1947 में हालात खराब थे। हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब की मृत्यु भी 1947 में हुई थी लेकिन परिस्थितियों के कारण आप उन के जनाज़ा में शामिल नहीं हो सके और दो दिन बाद कादियान पहुंचे।

उनके जो ऐतिहासिक दृष्टि से जमाअत के साथ जुड़ी घटनाएं हैं वह यह है कि जब वायु सेना में थे तो उस समय विभाजन के समय हज़रत मुस्लेह मौऊद के निर्देश पर जमाअत ने दो छोटे जहाज़ खरीदे थे। पायलट की ज़रूरत थी। कहते हैं एक रात मुझे संदेश मिला कि हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने बुलाया है कि तुरंत आ जाओ तो यह तभी कादियान रवाना हो गए और वहां

जाकर तय पाया कि जहाज़ के इन्चार्ज हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा नासिर अहमद साहिब, ख़लीफतुल मसीह सालिस, जो उस समय सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया थे वे होंगे और उनके अधीन यह काम करेंगे। बहरहाल उस समय यह बहुत सी आवश्यक वस्तुओं को पाकिस्तान पहुंचाते रहे।

एक दिलचस्प घटना जो उन्होंने लिखी है जो एक बड़ी ऐतिहासिक और बड़ा इवेंट है वह यह है कि एक दिन सुबह मुझे मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हु ने कसरे ख़िलाफत के कार्यालय में बुलाया और मुझे कहा कि तुम्हें अपनी आज सबसे मूल्यवान चीज़ मैं दे रहा हूं जो तुम ने लाहौर लेकर जाना है और शेख बशीर अहमद साहिब के सुपुर्द करनी है और इस बात की रक्षा और ध्यान के बारे में तुम ने शेख साहिब को इन्हीं शब्दों में बयान करना है जैसा मैं तुम्हें बता रहा हूँ और उनसे प्राप्ति रसीद भी लेनी है जो फिर तुम ने वापस आकर मुझे देना है। अत: मीर साहिब कहते हैं कि मेरा अपरिपक्व मन था तो यह विचार मुझे आया कि शायद हुज़ूर मुझे कोई जमाअत का ख़ज़ाना या आभूषण और हीरे के बॉक्स देंगे जो मैंने लेकर जाना है। लेकिन थोड़ी देर बाद हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी अपनी जगह से उठे और एक मैला सा सफर का बैग लाकर मुझे दिया। बैग कैनवास का था और ज़िप (zip) भी उसकी टूटी हुई थी। बैग कागज़ों से भरा था। आप ने वह बैग मेरे सामने रखा और कहा कि मेरी कुरआन शरीफ की लिखी हुई तफसीर का कुछ भाग तो छप गया है। कुछ भाग लिखा जा चुका है लेकिन अब छपा नहीं। हज़रत ख़लीफातुल मसीह सानी ने फरमाया कहा कि लेकिन अब भी कई भाग की व्याख्या लिखने का काम बाकी है। क्योंकि मेरे जीवन का एक बड़ा मिशन इस तफसीर को पूरा करना है इसलिए मेरी आदत है कि दिन हो या रात, चलता फिरता हूं या कोई और काम कर रहा हूं लेकिन जो भी कर रहा हूँ अगर कुरआन शरीफ की किसी आयत के बारे में मेरे मन में कोई नया मतलब आए तो तुरंत इस विचार को एक सादा कागज़ पर लिखकर इस बैग में डाल कर सुरक्षित कर लेता हूँ ताकि ज़रूरत के समय काम आ सके। फिर उन्होंने कहा कि ज़रूरी नहीं कि इन कागज़ों पर लिखे हुए नोटिस में कोई क्रम हो लेकिन मेरे लिए यह बहुत बड़ी पूंजी है। तो मीर साहिब कहते हैं मैं ने हुज़ूर से बैग लिया, उसे संभाला और विमान पर रखकर लाहौर ले गया और वहाँ जा कर एयरपोर्ट से फोन करके शेख बशीर अहमद साहिब को बुलाया और उनको यह सौंप दिया और उनसे रसीद ली। यह काफी लंबा घटना है और एक ऐतिहासिक घटना है कि हज़रत मुस्लेह मौऊद ने महत्वपूर्ण कीमती नोटिस जो थे वह यह लेकर आए। इस बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद ने विशेष बल दे कर भेजा था। बहरहाल 1950 ई में फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद ने उन्हें कह दिया कि ठीक है अब तुम वायु सेना वापस जा सकते हैं जहां उन्होंने 1965 ई तक वायु सेना में नौकरी और विंग कमांडर के पद तक पहुंचे और इस दौरान उन्होंने कुछ बड़े कोर्स भी किए। इंग्लैंड में भी कोर्स किए। 1960 ई से 1963 ई तक क्वेटा में सेना कमाण्ड और स्टाफ कॉलेज में बतौर प्रशिक्षक भी रहे। वार योजना (war planning) के इन्चार्ज भी रहे और जब यह 1953 ई में कुछ वायु प्रशिक्षण के कोर्स के लिए यहाँ आए थे तब आदरणीय चौधरी ज़हूर बाजवा साहिब यहाँ मिशनरी थे तो कहते हैं कि अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, क्योंकि मेरे वापसी के कुछ दिन बाकी थे इसलिए यहां मिशन हाउस में बाजवा साहिब के पास मैं ठहर गया। तब कहते हैं मुझे बाजवा साहिब के माध्यम से कर्नल डगलस साहिब से मुलाकात का मौका पैदा हुआ। बाजवा साहिब ने उन्हें मेरा परिचय करवाया। कहते हैं कि कर्नल डगलस साहिब के पास गए तो उनसे मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उस मुदकमा के बारे में पूछा जो कि कत्ल का मुकदमा था। कहते हैं कर्नल साहिब ने कहा कि मैं उस समय गुरदासपुर के डिप्टी कमिश्नर था। कहते हैं कि कप्तान डगलस साहिब ने कहा कि जब यह कत्ल का मुकदमा मेरे सामने पास पेश हुआ इससे कुछ साल पहले की एक घटना है जहां से मैं तुम्हें सुनाना शुरू करता हूँ। कहते हैं कि मैं उस समय बटाला का सहायक कमिश्नर था। एक दिन मैं अमृतसर से बटाला ट्रेन में वापस आ रहा था। कर्नल डगलस ने उन्हें बताया (यह भी एक ऐतिहासिक घटना है) कि अंतिम बोगी के फर्स्ट क्लास में सवार था तो अमृतसर से चलने से पहले वह कहते हैं कि मुझे गुरदासपुर सहायक कमिश्नर का संदेश मिला कि मुझे आप से एक ज़रूरी बात करनी है इसलिए मैं तुम्हें बटाला स्टेशन पर मिलूंगा। कर्नल डगलस कहते हैं जब ट्रेन बटाला पहुंची तो सहायक कमिश्नर गुरदासपुर स्टेशन पर मौजूद नहीं था। इस विचार से कि शायद ट्रेन की सबसे अगली बोगी वाले फर्स्ट क्लास में मुझे ढूंढ रहा होगा। जिल्दी ट्रेन से उतरा और प्लेट फार्म के जंगले के साथ जिल्दी जिल्दी कदम बढ़ाते हुए ट्रेन के सबसे अगले भाग की ओर रवाना हुआ। फिर कर्नल डगलस ने उन्हें बताया कि जब मैं प्लेट फार्म का करीब दो तिहाई हिस्सा पार कर चुका तो क्या देखता हूँ कि सामने से एक व्यक्ति चला आ रहा है निगाहें नीची हैं बेहद नूरानी चेहरा है उसके चेहरे में एक ऐसा आकर्षण था कि मेरा दिल और दिमाग हिल कर रह गए। कर्नल साहिब कहते हैं कि लगता था कि उसे दुनिया से कोई कामना ही नहीं और वह धीरे धीरे चला आ रहा था। मेरे लिए संभव ही नहीं रहा कि इतने नूरानी चेहरे से अपनी निगाहें उठा सकूं तो मैं टकटकी बांधे उसके चेहरे की ओर देखता रहा। वह व्यक्ति मेरे पास से गुज़र गया फिर भी मैं उसे देखता रहा और धीरे धीरे घूमता गया और आखिरकार मैं उलटे पैर चलने लग गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दूसरी ओर जा रहे थे यह दूसरी ओर जा रहे थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देखने के लिए उन्होंने अपना रुख हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ कर लिया और उल्टे पैर जिस तरफ जा रहे थे उस तरफ चलना शुरू कर दिया ताकि मैं उस व्यक्ति को देखता रहूं। तो कहते हैं इस समय में सहायक स्टेशन मास्टर जो भारतीय था वह भी अपनी झंडियाँ लेकर आ गया, लेकिन उसने मुझे नहीं देखा। उल्टा चलते हुए हमारी टक्कर हो गई जिसकी वजह से वह गिर गया हालांकि दोष मेरा था लेकिन क्योंकि उस समय अंग्रेज़ों की सरकार थी वह सहायक स्टेशन मास्टर मुझ से माफियाँ मांगने लग गया। उस से मैंने कहा नहीं तुम्हारे अपराध नहीं, मेरा है। ख़ैर मैंने उससे पूछा कि यह जो व्यक्ति जा रहा है यह कौन है? तो स्टेशन मास्टर ने कहा तुम नहीं जानते? यह कादियान के मिर्ज़ा साहिब हैं। तो कहते हैं उस समय भावनात्मक रूप से बड़ा प्रभानवत हो चुका था। ऐसा नूरानी चेहरा मैंने सारी उम्र कभी नहीं देखा था और यह प्रभाव मुझ पर काफी समय तक कायम रहा। फिर धीरे धीरे भूल गया।

कहते हैं कि फिर जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की फ़ाइल आई और मैं जज नियुक्त हो कर आया तो उस समय मैंने देखा कि फ़ाइल बड़ी पूरी है। जो कैस बनाया गया है यह बड़ा सही तरीके से बनाया गया है और कोई इसमें त्रुटि नहीं है और आरोपी को सज़ा बहरहाल देनी पड़ेगी। लेकिन कहते हैं,

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

लेकिन जब मैंने यह पढ़ा कि आरोपी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद आफ कादियान है तो मुझे एक बड़ा झटका लगा। वह कई साल पहले पुरानी बात मुझे याद आ गई और मेरा दिल कभी यह मानने के लिए तैयार नहीं था कि जो चेहरा मैंने बटाला स्टेशन पर कुछ साल पहले देखा था वह ऐसा काम करेगा बल्कि ऐसा सोच भी सके। कहते हैं कि मैं बहुत परेशान हुआ और लगातार परेशान रहा और कई बार फाइल में कोई ग़लती निकालने की कोशिश की लेकिन सफल न हो सका। इस परेशानी की स्थिति कहते हैं मैंने अंग्रेज डीएसपी को अपने कार्यालय में बुलाया ताकि इसके साथ मुकदमा के के बारे में सलाह करूं। डी.एस.पी से पूछा कि अब्दुल हमीद जिस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर आरोप लगाया था कि नऊज़ो बिल्लाह आप ने इसे मारने के लिए भेजा है क्या वह पुलिस के कब्जे में है या अब चर्च के पास है। तो इस सवाल पर कहते हैं अंग्रेज़ डी.एस.पी चौंका क्योंकि उसे अचानक एहसास हुआ कि पुलिस ने एक बहुत बड़ी ग़लती की है क्योंकि पुलिस ने अब्दुल हमीद को अपनी हिरासत में नहीं रखा बल्कि चर्च के पास ही रहने दिया और कहते हैं वह उसी समय भागता हुआ गया मैं अभी आता हूँ। कुछ देर के बाद जब वह अंग्रेज़ डी.एस. पी वापस आया तो उसने कहा कि हम से बड़ी गलती हो गई थी कि हम ने अब्दुल हमीद को चर्च के पास ही रहने दिया। अब हम उसे अपने कब्जे में ले लिया है और वह मान गया है कि यह केस बिल्कुल झूठा है और मैं ने चर्च से रकम लेने के यह कहानी घड़ी है। इसलिए मुकदमा चला और सब गवाहियाँ सुनने के बाद कर्नल डगलस साहिब कहते हैं कि मैंने मिर्ज़ा साहिब को सम्मान जनक रूप से बरी कर दिया। फैसला सुनाने के बाद मैंने मिर्ज़ा साहिब से कहा कि अगर आप चाहें तो अभियोजन करने वालों पर आप हर्जाना का मामले कर सकते हैं। लेकिन उन्होंने कहा कि नहीं हमारा मुकदमा अल्लाह तआला के पास है मुझे कोई हर्जाना नहीं चाहिए।

(उद्धरित अल्फ़ज़ल, दिनांक 26 अगस्त 2010, पृष्ठ 3 से 5, दिनांक 27 अगस्त 2010, पृष्ठ 3 से 4, दिनांक 30 अगस्त 2010, पृष्ठ 5, दिनांक 18 मई 2009, पृष्ठ 3 से 4)

तो यह दो ऐतिहासिक घटनाएं उनकी हैं। एक तो विभाजन के समय हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह का का सामान लाने का और एक यह कर्नल डगलस की कहानी। बाकी घटना तो सुनी ही हुआ है लेकिन यह इतना हिस्सा जो पहले था वह बहुत कम लोगों ने सुना या पढ़ा है।

आप जैसा कि मैंने बताया हज़रत डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब के सब से बड़े बेटे थे और इस लिहाज से जो चुनाव ख़िलाफत कमेटी है, सहाबी के बड़े बेटे होने के नाते इसके सदस्य भी थे और ख़िलाफत सालिसा, राबिया और ख़ामिसा में चुनाव खिलाफत कमेटी में शामिल हुए और उन्होंने यही कहा कि चुनाव के समय जो भावनाओं और विचार होते हैं उससे मैं गवाही दे सकता हूँ कि जो ख़िलाफत है वह अल्लाह तआला की तरफ से मिलती है क्योंकि कई बार आदमी कुछ और सोच रहा होता है, लेकिन जिसे अल्लाह तआला ने ख़लीफा बनाना होता है उसके लिए ही दिल में तहरीक पैदा कर देता है। बहुत नेक, दुआ करने वाले थे लेकिन ख़ामोश दुआ करने वाले इंसान थे। और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो प्रेम और इश्क था उनके बारे में उनकी बेटी लिखती हैं कि अल्लाह तआला और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से गहरा प्यार था और मुझे भी यही कहते थे कि अल्लाह तआला की महानता को हर दिन महसूस करने कोशिश करो। केवल औपचारिक इबादत का कोई लाभ नहीं होता। फिर वह लिखती हैं कि आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र सीरत का अध्ययन करते हैं तो आंखों में आंसू आ जाते हैं। बड़े प्यार और भावनाओं के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख किया करते थे और कहती हैं सांसारिक गतिविधियां भी हों चाहे तैराकी या सैर है इसमें हर समय ज़िक्र और अल्लाह तआला की याद हमेशा सामने रखते। पिता होने के लिहाज़ से भी बड़े शफीक पिता थे। सारे बच्चों का ख्याल रखा। बच्चों को समझाते रहे। खिलाफत से संबंध भी बहुत मज़बूत था। मेरे साथ भी ख़िलाफत के बाद उन्होंने विशेष संबंध रखा और इसे बढ़ाया और बड़ा ईमानदारी व निष्ठा व्यक्त की। अल्लाह तआला उनके स्तर ऊंचा करे, माफी का व्यवहार करे और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियों पर स्थिर रहने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा आदरणीया महमूदा बेगम साहिबा पत्नी चौधरी मुहम्मद सिद्दीक़ भट्टी साहिब का है जो हमारे मुबल्लिग़ सिलसिला नाइजर असग़र अली भट्टी साहिब की मां हैं। यह 16 जूलाई को 73 साल की उम्र में वफात पा गईं। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके परिवार में अहमदियत 1928 ई में आई जबकि आप के दादा चौधरी सर्वर खान मरहूम ने अहमदियत स्वीकार की। उनके बेटे लिखते हैं कि आप ने मितव्ययिता और स्वाभिमान से जीवन गुज़ारा। स्वाभिमान महिला थीं। रौब वाली महिला थीं। सारी उम्र धैर्य और दुआ से अपने जीवन व्यतीत किया था। खिलाफत से बेपनाह मुहब्बत थी। जमाअत के कार्यों में बढ़चढ़ कर भाग लेती थीं। अत्यंत सरल और ग़रीबों का ध्यान रखने वाली महिला थीं। नमाज़ और क़ुरआन से प्रेम था। सुबह तीन बजे तहज्जुद के लिए निरन्तर उठ जातीं और कहतीं कि तहज्जुद मैंने शादी से पहले शुरू की थी और मुझे याद नहीं कि कभी सुस्ती के कारण मैंने तहज्जुद छोड़ी हो। लिखते हैं कि नाश्ता आदि और घर के दूसरे कार्यों को जिल्दी जिल्दी समाप्त कर के इश्राक की नमाज़ के लिए खड़ी हो जातीं। इन के पति 28 साल तक अपनी जमाअत के सदर रहे इस समय में जो भी आने वाले लोग थे उनका आतिथ्य उन्होंने बहुत बढ़चढ़ कर किया और उनके बेटे लिखते हैं कि वित्तीय स्थिति अच्छी न होने के बावजूद ग़रीबों की मदद भी करती थीं। अगर कोई परेशानी या वित्तीय तंगी होती तो नमाज़ शुरू कर देती थीं और तंगी के बावजूद बच्चों को शिक्षा दिलवाई। बच्चों के लिए शिक्षा के लिए अपना ज़ेवर और मवेशी तक बेच दिए। अपने भाइयों और माता-पिता की मौत के सदमे को सहन करना पड़ा लेकिन कभी शिकवा नहीं किया। इसी तरह उन की दो पोतियाँ भी मर गए। स्वर्गीया मूसिया थीं और पीछे रहने वालों में पति के अलावा दो बेटियों और छह बेटे यादगार छोड़े हैं। जैसा कि मैंने कहा उन के बेटे असग़र अली भट्टी नाइजर में मिश्नरी हैं और यह अपने प्रचार के क्षेत्र में व्यस्त होने के कारण से नमाज़ जनाज़ा में शामिल नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला मरहूमा के स्तर ऊंचा करे और उनकी औलाद के लिए समस्त दुआओं को स्वीकार करे। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की ताकत प्रदान करे।

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का दौरा जर्मनी, अप्रैल 2017 ई. (भाग -6)

☆ आज के इस सद्भाव और सहिष्णुता के वातावरण से मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ और मुझे व्यक्तिगत रूप से इस बात की भी ख़ुशी है कि यहां जर्मन बहुत आए हैं। माननीय ख़लीफतुल मसीह बहुत शान्ति प्रिय इंसान हैं और बात बड़ी स्पष्ट करते हैं और शान्ति की किरणें इन से निकलती हैं। मैं माननीय ख़लीफतुल मसीह से बहुत प्रभावित हुई हूँ।

☆ मूल यही है कि धर्म का ध्यान हो। यह न हो कि यहां आए और धर्म को भूल गए। धर्म को याद रखें।

☆ अपने प्यारे हुज़ूर से मुलाकात के बाद जहां उनके चेहरे पर मुस्कान थी वहाँ कुछ की आंखें नम थीं और रो रही थीं। उनके जीवन में पहली बार यह मुबारक और बरकतों वाले क्षण आए कि अपने आक़ा की नज़दीकी नसीब हुआ और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और यह मुबारक क्षण उनके लिए अमृत बन गए। एक दोस्त कहने लगे कि आज जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

11 अप्रैल 2017 ई दिनांक मंगलवार (शेष रिपोर्ट)

मेहमानों की अभिव्यक्ति (तास्सुरात)

मस्जिद बैतुल नसीर के उद्घाटन समारोह में शामिल होने वाले कुछ मेहमानों ने अपने भाव और दिली भावनाओं को व्यक्त किया कि ख़लीफ़तुल मसीह के भाषण ने उनके दिल पर गहरा असर किया है। इस में से कुछ पहले प्रस्तुत की जा चुकी हैं। शेष प्रस्तुत हैं।

* *एक मेहमान मर्द ने कहा कि मेरे लिए यह सम्मान की बात है कि आज माननीय ख़लीफतुल मसीह से दूसरी बार मिला हूं। वह निहायत ही में ज्ञान वाले मनुष्य मालूम होते हैं और उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

*एक मेहमान महिला ने कहा कि माननीय ख़लीफतुल मसीह से शान्ति की किरणें निकलती हैं और लगता है कि वह एक बहुत ही सम्मानित और प्रिय व्यक्ति हैं।

*एक मेहमान पुरुष ने कहा कि मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। उन्होंने कहा कि माननीय ख़लीफतुल मसीह ने सही कहा है कि यदि हम खुलकर और मिलजुल कर प्रेम और सहिष्णुता रहेंगे तो शंकाएं समाप्त हो जाएंगे। माननीय ख़लीफतुल मसीह एक ज्ञान वाले व्यक्ति हैं और मुझे महसूस हुआ है कि आप अपनी जमाअत के लोगों से बहुत प्यार करते हैं।

*एक मेहमान पुरुष ने कहा कि आज के इस शांतिपूर्ण वातावरण में बहुत प्रभावित हुआ हूँ। माननीय ख़लीफतुल मसीह एक बहुत शान्त और बहुत शांतिप्रिय हैं। मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ कि जहां दुनिया भर में इस्लाम के विषय में यही बताया जाता है कि वह घृणा की शिक्षा देता है यहां पर मुसलमान इसके विपरीत शांति के विषय में बातचीत कर रहे हैं।

*एक मेहमान महिला ने कहा कि आज के इस सद्भाव और सहिष्णुता के वातावरण से मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ और मुझे व्यक्तिगत रूप से इस बात की भी ख़ुशी है कि यहां जर्मन बहुत आए हैं। माननीय ख़लीफतुल मसीह बहुत शान्ति प्रिय इंसान हैं और बात बड़ी स्पष्ट करते हैं और शान्ति की किरणें इन से निकलती हैं। मैं माननीय ख़लीफतुल मसीह से बहुत प्रभावित हुई हूँ।

मस्जिदों के उद्घाटन की मीडया में कवरेज

मस्जिद बैयतुल आफियत वालडशट और मस्जिद बैयतुन्नसीर आगस बर्ग के उद्घाटन के अवसर पर इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया ने कवरेज दी है। मस्जिद बैयतुल आफियत वाल्ड शट के उद्घाटन के अवसर पर निम्नलिखित टीवी और अख़बारों के पत्रकार आए थे।

(1) टीवी चैनल SWR (2) अख़बार BADISCHE-ZEITUNG-DE (3) अख़बार SUDKURIER

*अख़बार BADISCHE-ZEITUNG ने अपनी ऑनलाइन वेबसाइट पर मस्जिद आफियत के उद्घाटन की ख़बर देते हुए लिखा:

"अहमदिया जमाअत का समारोह, मस्जिद आफियत का उद्घाटन "

मस्जिद आफियत वाल्डो शट Tiegen के उद्घाटन के अवसर पर सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़ुद हाज़िर हुए। ख़लीफतुल मसीह ने सब से पहले उद्घाटन के अवसर पर पट्टिका का अनावरण फ़रमाया और साथ दुआ करवाई। इसके बाद ख़लीफतुल मसीह ने प्रेम और शांति की अभिव्यक्ति के रूप में मस्जिद आफियत के सामने एक पौधा लगाया। ख़लीफतुल मसीह के भाषण का जर्मन अनुवाद किया गया। इसमें आपने फ़रमाया कि हम इस्लाम का वास्तविक संदेश फैला रहे हैं तथा ख़लीफा साहिब ने कहा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत शांति और प्यार व मुहब्बत और सद्भाव फैलाना चाहती है। इसके अतिरिक्त अन्य मेहमानों का उल्लेख किया है जिन्होंने अपना विचार उद्घाटन के अवसर पर व्यक्त किया था।

*एक दूसरे अखबार Sudkurier ने अपनी ऑनलाइन वेबसाइट पर तीन तस्वीरें दी हैं। एक तस्वीर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ और अन्य मेहमान पधारे हैं और दूसरी स्टेज की तस्वीर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मेहमानों को संबोधित फरमा रहे हैं। तीसरी तस्वीर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ पौधा लगा रहे हैं। (ख़बर के शीर्षक में यह लिखा हुआ है कि "अहमदिया जमाअत मस्जिद आफियत के वाल्डो शट Tiengen में यह उद्घाटन हुआ। मस्जिद आफियत वाल्डो शट के उद्घाटन के अवसर पर सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया के ख़लीफा मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़ुद हाज़िर हुए। यह कार्यक्रम दुनिया भर में प्रसारित हो रहा था।

इस समारोह में कई पड़ोसी और अन्य गणमान्य मेहमान शामिल हुए थे। ख़लीफा साहिब ने कहा कि हम इस्लाम का असल पैग़ाम फैला रहे हैं। साथ ही यह कहा कि जमाअत अहमदिया शांति और सद्भाव से पेश आती है। एक वास्तविक मुसलमान का कर्तव्य है कि अपनी मस्जिद और अपने पड़ोसियों और गिर्जों और यहूदी उपसाना स्थलों की सुरक्षा करे। इस के अतिरिक्त अन्य मेहमानों का उल्लेख है जिन्होंने उद्घाटन के अवसर पर अपने विचार व्यक्त किया था।

*इसी तरह एक टीवी चैनल और दो अख़बरों के द्वारा मस्जिद बैयतुल आफियत के उद्घाटन की ख़बर 22 लाख 73 हज़ार 789 व्यक्तियों तक पहुँचीं। मस्जिद बैयतुन्नसीर आगस बर्ग के उद्घाटन समारोह को निम्नलिखित इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया ने कवरेज दी।

टीवी चैनल संख्या दर्शकों और दर्शक

Bayerischer Rundfunk. 1766462, BR Mediathek Video.1766462, Sat 1.

रेडियो संख्या दर्शकों और दर्शक

Antenne Bayern. 448141, Radio Bamberg.23113, Plassenburg.375, EINS

अख़बार संख्या दर्शकों और दर्शक

Aichacher Zeitung.6268, Arcor.1274500, Augsburger Allgemeine.862519, Bayerische Staatszeitung. 5216, Bild de.9132186, Die Welt.6357477, Focus online.3956478, Frankenpost.111096, Heimatszeitung de. 32299, Idowa Mediendienste.100129, mittelbayerische de .359942, Neue Presse Coburg.43396, Onetz.97990, Passauer Neue Presse . 452414, Schattenblick.54692, Schwabische de. 440220, Stadtzeitung. 8263,

Suddeutsche zeitung. 3722674,

कुल: 31022312

*अख़बार Augsburger Allgemeine ने अपने इंटरनेट प्रकाशन में इस शीर्षक के साथ ख़बर प्रसारण कि " अहमदिया जमाअत आगस बर्ग प्रांत बावारिया की तीसरी मस्जिद का उद्घाटन " दूसरा शीर्षक इस तरह लगाया कि "मस्जिद के उद्घाटन के लिए ख़लीफ़ा ख़ुद लंदन से आगस बरग आए जमाअत अपने आपको शांतिपूर्ण इस्लाम का राजदूत मानती है।"

जमाअत के ऐतिहासिक परिचय के अतिरिक्त पत्रकार ने लिखा है कि 67 वर्षीय ख़लीफ़ा सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया के आध्यात्मिक प्रमुख हैं। आगस बर्ग ख़लीफ़ा की जर्मनी में एकमात्र मंज़िल नहीं है बल्कि एक बहुत व्यस्त दौरा है। उनसे पहले जो ख़लीफ़ा थे उन्होंने जर्मनी जमाअत के शत वर्षीय जयंती के अवसर पर सौ मस्जिदों की योजना दे दी थी जिसके अधीन आगस बर्ग मस्जिद बैयतुन्नसीर 51 वें नंबर पर है। मस्जिद के कुल खर्च छह लाख यूरू और जो जमाअत लोगों की कुर्बानियों से अदा हुए हैं।

*अख़बार Augsburger Allgemeine ने अपने दूसरे अंक में इस शीर्षक के साथ मस्जिद बैयतुन्नसीर के उद्घाटन की ख़बर दी कि अहमदिया जमाअत ने अपनी मस्जिद का उद्घाटन कैसे किया। दूसरे शीर्षक में लिखा है कि " एक समारोह " इस मुस्लिम जमाअत ने अपनी इबादतगाह का उद्घाटन समारोह oberhausen में मनाया। ख़लीफ़ा ने इस्लामिक स्टेट की निंदा की। पुरुषों और महिलाओं ने अलग अलग इस दिन को मनाया। अख़बार ने एक तस्वीर भी प्रकाशित की जिस में मेयर आगस बर्ग हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ खड़े हैं । जमाअत का शुरूआत में विरोध का उल्लेख और मस्जिद के उल्लेख के अतिरिक्त लिखा है कि एक समारोह में जमाअत आगस बर्ग ने मस्जिद बैयतुन्नसीर का उद्घाटन किया। लगभग 180 मेहमान विभिन्न क्षेत्रों से आए थे। जैसे सिटी काउंसिल, प्रदेश के सांसद और देश भर के सांसद। जैसा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत का तरीका है ख़लीफ़तुल मसीह अपनी पत्नी, निजी सचिव और बाकी स्टाफ के साथ आए। ख़लीफ़ा ने मस्जिद के मर्दाना हॉल में नमाज़ पढ़ाई और मस्जिद की ज़ियारत की। खासकर जो 80 स्थानीय अहमद थे उनकी कोशिश थी कि ख़लीफ़ा के करीब क़रीब हो सकें।

सुरक्षा व्यवस्था के साथ 280 विशेष मेहमानान का कांग्रेस के हॉल में एकत्र हुए और महिलाओं के लिए अलग हॉल में प्रावधान किया गया था । एक स्थानीय नई अहमदी महिला ने कहा कि उन्हें gender segeration से बिल्कुल भी कोई समस्या नहीं।

*इसी तरह एक अन्य ऑनलाइन अखबार stadt zeitung ने इस शीर्षक के साथ ख़बर प्रकाशित कि "शहर आगस बर्ग की पहली मस्जिद बैयतुन्नसीर का उद्घाटन " दूसरे शीर्षक में लिखा है कि जमाअत अहमदिया आगस बर्ग के लिए यह बड़ा महत्वपूर्ण अवसर था। मस्जिद के उद्घाटन के लिए माननीय ख़लीफ़तुल मसीह लंदन से तशरीफ़ लाए। यह मस्जिद, शहर आगस बर्ग की पहली मस्जिद है। जमाअत का परिचय और जमाअत की सौ मस्जिदों की योजना की शुरूआत के अतिरिक्त पत्रकार ने लिखा कि दोपहर की धूप में बच्चों की नज़्मों के साथ सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा का स्वागत किया गया। आज के दिन केवल मस्जिद का उद्घाटन ही नहीं बल्कि उनके धर्म की सबसे बड़ा आध्यात्मिक व्यक्ति पधारे रहे हैं। उन्हें पोप जैसा माना जाता है। इस अवसर की विशेषता लोगों के चेहरों से पता चलता है। बड़ी बेसब्री से उनका इंतज़ार किया जा रहा है पुलिस भी तैयार खड़ी है। मस्जिद के उद्घाटन के बाद रिवायत के अनुसार दुआ हुई। एक साहिब के दुआओं समय आंसू जारी हैं। लेकिन वह कैमरा फ्लैश लाइट के बावजूद बाद में आंसू पोंछते हैं। दुआ की चुप्पी बीच बीच में लोगों के रोने से भर जाता है। ख़लीफ़ा ने केवल आगस बर्ग ही नहीं रहना बल्कि अपने तीन सप्ताह के दौरे में आप की व्यस्तता बहुत अधिक हैं। इसी तरह 3 टीवी चैनल, 4 रेडियो और 25 अख़बारों द्वारा मस्जिद बैयतुन्नसीर के उद्घाटन की ख़बर 3 करोड़ 10 लाख 22 हज़ार 312 व्यक्तियों क पहुंचीं।

12 अप्रैल 2017 ई (दिन बुधवार)

नमाज़े फ़ज्र पढ़ने के लिए होटल marriott में एक हॉल प्राप्त किया गया था। स्थानीय जमाअत के दोस्तों पुरुषों और महिलाएं नमाज़ पढ़ने लिए कार्यक्रम के अनुसार होटल पहुंचे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने साढ़े पांच बजे तशरीफ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने आवासीय अपार्टमेंट में पधारे।

फैमली मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े दस बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ होटल से बाहर आए और मस्जिद अल महदी के लिए रवाना हुए। लगभग ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद अल महदी तशरीफ़ लाए। स्थानीय जमाअत के दोस्तों ने एक बार फिर हुज़ूर अनवर का भरपूर स्वागत किया। बच्चों और बच्चियों ने दुआ की नज़्में पेश कीं। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बढ़ा कर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और मस्जिद के हॉल में पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार फैमली मुलाकात शुरू हुई। आज के इस सत्र में 41 परिवारों के 162 लोगों ने अपने प्यारे हुज़ूर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया। मुलाक़ात का श्रेय पाने वाले यह परिवारों म्यूनिख के अतिरिक्त इसके आसपास निम्नलिखित जमाअतों से थीं। Weingarten Aalen Goeppingen Augsberg Nuernberg Ulm-Donau Kempten Neufahrn Sambach Am Inn Regensburg Boeblingen Waiblingen

इन सभी परिवारों ने अपने प्यारे हुज़ूर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने करूणा स्वरूप शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान किए। मुलाक़ातों का कार्यक्रम सवा एक बजे तक जारी रहा। बाद में आदरणीय आबिद वहीद खान साहिब प्रभारी प्रेस एंड मीडिया दफ्तर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह से दफ्तरी मुलाकात की। उसके बाद स्थानीय जमाअत की कार्यकारिणी और अन्य जमाअत के उहदेदारों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य हासिल किया। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर तथा रो अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ वापस होटल पधारे।

मस्जिद अल महदी म्यूनिख से सटे क्षेत्र नियू फारन में स्थित है। 9 जून 2014 ई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपने दौरा जर्मनी के दौरान इस मस्जिद का उद्घाटन किया था। मस्जिद यह प्लाट एक हज़ार वर्ग मीटर है। यह भूखंड 11 जून 1986 को खरीदा गया था और उस पर पहले से ही एक इमारत मौजूद थी। यह जगह बतौर केंद्र उपयोग होती रही। वर्ष 2013 ई में इस इमारत को मस्जिद के रूप में परिवर्तित करने का काम शुरू हुआ। इमारत में अधिक विस्तार किया गया। लजना के लिए एक अलग हॉल बनाया गया। एक 8.50 मीटर ऊंचा मीनार बनाया गया। यहां जमाअत के दफ्तर भी मौजूद हैं और एक आवासीय अपार्टमेंट भी मौजूद है और एक बड़ा केंद्रीय रसोई भी है।

म्यूनिख शहर और क्षेत्र को यह एक सुविधा प्राप्त है कि म्यूनिख शहर के एक मोहल्ले पासिंग में बसी एक जर्मन महिला carola mann साहिबा ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में पत्र लिखा था। महोदया का यह पत्र अख़बार बदर ने अपने 14 मार्च 1907 के अंक में "जर्मनी से एक श्रद्धा भरा ख़त" के शीर्षक से प्रकाशित किया था। महोदया ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को लिखा, पत्र का एक हिस्सा प्रस्तुत है:

" मैं कई महीने से आप का पता तलाश कर रही थी ताकि आप को पत्र लिखूं और अन्त में अब मुझे एक व्यक्ति मिला जिसने मुझे आप का पता दिया है। मैं आपसे माफी चाहता हूँ कि आप पत्र लिखती हूँ। लेकिन कहा गया है कि आप ख़ुदा के बुजुर्ग रसूल हैं मसीह मौऊद की शक्ति में हो कर आए हैं और मैं दिल से मसीह को प्यार करती हूँ। आप विश्वास रखें कि प्यारे मिर्ज़ा में अपनी श्रद्धावती दोस्त हूँ "

अब अल्लाह तआला फज़्ल से म्यूनिख और इसके आसपास के क्षेत्रों में कई जमाअतें बन चुकी हैं और जमाअत अहमदिया मस्जिद अल महदी बन चुकी है और जमाअत लगातार आगे बढ़ रही है। अब कार्यक्रम के अनुसार यहाँ से वापस फ्रैनकफोर्ट बैयतुस्सबूह को प्रस्थान था। स्थानीय जमाअत के दोस्त पुरुष और महिलाएं और बच्चे बच्चियां हुज़ूर अनवर को अलविदा कहने के लिए होटल बाहरी परिसर में मौजूद थे बच्चों के गिरोह विदाई नज़्में पढ़ रहे थे।

3 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ होटल से बाहर आए। हुज़ूर अनवर ने अपना हाथ बढ़ा कर सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और सामूहिक दुआ करवाई और यहाँ फ्रैनकफोर्ट लिए प्रस्थान

किया। करीब पौने चार घंटे की सफर के बाद सात बजकर 35 मिनट पर बैयतुस्सबूह फ्रैनकफोर्ट तशरीफ़ लाए। जमाअत के दोस्त पुरुष और महिलाएं अपने प्यारे हुज़ूर के आगमन की प्रतीक्षा में थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बढ़ा कर अस्सलामो अलैकुम कहा और कुछ देर के लिए अपने निवास पर तशरीफ ले गए। बाद में साढ़े आठ बजे हुज़ूर अनवर ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी कियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

13 अप्रैल 2017 (दिन गुरुवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 5 बज कर 30 मिनट पर तशरीफ़ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक और दुनिया भर के विभिन्न देशों से प्राप्त होने वाली रिपोर्टें और डाक देखीं। जब से हुज़ूर अनवर जर्मनी में रहते हैं दुनिया के विभिन्न देशों की जमाअतों से दैनिक फैक्स और मेल द्वारा ख़त और रिपोर्ट प्राप्त होती हैं। इसी तरह यहां जर्मनी के विभिन्न जमाअतों के सदस्यों द्वारा भी दैनिक सैकड़ों ख़त प्राप्त होते हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दैनिक साथ-साथ यह सारी डाक देखते और अपने मुबारक हाथों से निर्देश देते हैं। डाक के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के विभिन्न दफ्तर के मामलों में व्यस्त रहे। दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़े ज़ोहर व अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। पिछले पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दफ्तर के मामलों में व्यस्त रहे।

फैमली मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार छह बज कर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और फैमली मुलाकात शुरू हुई। आज शाम इस सत्र में 37 परिवारों के 130 लोगों को अपने प्यारे हुज़ूर से मुलाकात का सौभाग्य मिला। इन सभी परिवारों और दोस्तों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट प्रदान किए।

आज मुलाक़ात का श्रेय पाने वालों में फ्रैनकफोर्ट के विभिन्न क्षेत्रों के अतिरिक्त एप्पल हायम, कोबलनज़, गराऊस गईरायो, बोइब लनजन, वज़बादन, वेनगार्टन, रयूट लनजन, नेविस, तिनज़, वज़लर, राऊन हायम, मयूनसटर, हनाऊ, पेड्रो बोर्न, डेल मैन हारसट , आखन बाग़, कासल, गोमरस बाख़, ड्रामसटड, मेहदी आबाद, Eppertshausen रेड स्टाडिट, सटुट गार्ट, हमबरग, फ्राइड बर्ग और Wuerzburg से आने वाले परिवार और दोस्त शामिल हुए। इसके अतिरिक्त स्वीज़रलैंड, मॉरीशस और लिथुआनिया से आने वाले लोगों ने भी मुलाकात की सौभाग्य प्राप्त किया। जर्मनी से आने वाले कुछ परिवार और दोस्त बड़े लंबे सफर तय करके पहुंचे थे। कासल से आने वाले 200 किमी, सटट गार्ट से 210, बॉब लनजन से आने वाले 230 किमी, नियूस और रूट लनजन से आने वाले 250 किमी, मयूनसटर और पेड्रो बोर्न से 260 किमी, वेनगार्टन से आने वाले दोस्त 410 किलोमीटर और हमबरग से आने वाले 500 और मेहदी आबाद से सफर करके आने वाली परिवार 520 किलोमीटर की दूरी तय करके पहुंची थीं और जो कुछ क्षण उन्होंने अपने आक़ा के निकटता में व्यतीत किए वह उनकी सारे जीवन की पूंजी और उनके लिए और उनके बच्चों के लिए यादगार क्षण थे। हर एक उनमें से बरकत सेमेटते हुए बाहर आया। परेशानियों और समस्याओं में घिरे हुए लोगों ने अपनी पीड़ा दूर होने के लिए दुआ का अनुरोध किया। बीमारों ने अपनी चिकित्सा के लिए दुआएं हासिल कीं और प्रत्येक दिल का संतोष पाकर मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ बाहर आया। छात्रों और छात्राओं ने अपनी परीक्षा में सफलता के लिए अपने प्यारे आका से दुआएं हासिल कीं। अत: प्रत्येक ने अपने प्यारे हुज़ूर की दुआओं से भाग पाया और यह मुबारक क्षण उन्हें हमेशा के लिए तृप्त कर गए। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम आठ बजकर दस मिनट तक जारी रहा। बाद में आदरणीय आबिद वहीद खान प्रभारी प्रेस एंड मीडिया दफ्तर ने हुज़ूर अनवर के साथ दफ्तरी मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। साढ़े आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब व इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों के पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

अल्लाह तआला की कृपा से यह दिन बड़े ही मुबारक और बरकत वाले दिन और जमाअत जर्मनी के मुख्य केंद्र बैयतुस्सबूह में एक ईद का अवसर है। हुज़ूर अनवर का निवास इसी केंद्र में है। सुबह से शाम तक पतिंगे की तरह जमाअत के दोस्त पुरुषों और महिलाएं, युवा, बुज़ुर्ग, बच्चे और बच्चियों के आगमन का सिलसिला जारी रहता है। विशेष रूप से नमाज़ों के समय पांव रखने के लिए जगह नहीं मिलती। मर्दाना हॉल, लजना के दोनों हॉल, स्पोर्ट्स हॉल सब भरे होते हैं। कन्टीन और डाईनिंग हॉल में भी पंक्तियाँ बिछा दी जाती हैं। अन्य जो भी रास्ते गलियारे और रिक्त स्थान हैं वह भी भर जाता है। इमारत से बाहर खुली जगह पर भी पंक्तियाँ बिछाई जाती हैं। इतनी संख्या में लोग नमाज़ों में आ रहे हैं कि बैयतुस्सबूह के बाहरी परिसर में भी जगह नहीं मिलती। विशेष रूप से फजर की नमाज़ में तो तहज्जुद समय से ही हॉल भरने शुरू हो जाते हैं। कुछ दोस्त और परिवार बड़ी दूर से नमाज़ों के लिए उपस्थित होते हैं। हर व्यक्ति अपने प्यारे आक़ा की एक झलक देखने के लिए बेताब है और बरकतों को प्राप्त करने का कोई मौका हाथ से जाने नहीं देता। अल्लाह तआला यह सआदतें और यह बरकतें हम सभी के लिए मुबारक करे हो और अल्लाह तआला करे कि जहां हम उन बरकतों और सआदतों को समेटने वाले हों वहाँ उनकी रक्षा करने वाले भी हों। आमीन।

14 अप्रैल 2017 (दिनांक जुम्अ:)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े पांच बजे पधार कर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह दफ्तर की डाक और रिपोर्ट देखी और निर्देश फरमाए। हुज़ूर अनवर विभिन्न दफ्तर की मामलों में व्यस्त रहे।

आज जुम्अ: मुबारक का दिन था। जुम्अ: की नमाज के अदा करने का प्रबंध बैयतुस्सबूह से 34 किलोमीटर की दूरी पर राऊन हायम के क्षेत्र में व्यापक मारकीज़ लगाकर किया गया था। राऊन हायम में जमाअत ने अपनी मस्जिद निर्माण के लिए 2750 वर्ग मीटर क्षेत्र ज़मीन ख़रीद की हुई है। इस ज़मीन पर और उसके आसपास खुले क्षेत्र में तीन मारकीज़ लगाकर छह हज़ार जमाअत के लोगों के लिए जुम्अ: की नमाज़ अदा का प्रावधान किया गया था और अनुमान यही था कि इस संख्या के लगभग लोग शामिल होंगे। लेकिन अपने प्यारे हुज़ूर की अनुसरण में जुम्अ: की नमाज अदा करने की लिए जर्मनी भर से जमाअतों से और दूर दराज़ के क्षेत्रों से चौदह से पंद्रह हज़ार के बीच जमाअत के दोस्त पुरुष और महिलाएं यहां पहुंचीं। इस जगह तक पहुंचने वाले विभिन्न मार्गों और सड़कों पर दूर दूर तक अहमदी दोस्तों का एक हुजूम था। तीनों मारकीज़ के अतिरिक्त बाहर खुले मैदान में, पार्किंग क्षेत्र में विभिन्न मार्गों और सड़कों पर ग्यारह से बारह हज़ार के लगभग लोगों ने अपने प्यारे हुज़ूर की अनुसरण में जुम्अ: की नमाज अदा करने का सौभाग्य पाया। और तीन हज़ार के लगभग ऐसे व्यक्ति थे जिनको कहीं भी कोई जगह नहीं मिल सकी। कहीं पांव रखने की भी जगह नहीं थी। यह दोस्त जुम्अ: की नमाज़ में शामिल न हो सके। उनमें से कुछ नासिर बाग़ केंद्र में जुम्अ: के लिए पहुंचे और कुछ दोस्त बैयतुस्सबूह आए।

बड़े दूर दराज़ के क्षेत्रों से लंबा सफर तय करके जमाअत के दोस्त जुम्अ: के लिए पहुंचे थे। हमबरग और बर्लिन के क्षेत्रों से आने वाले 500 और 550 किलोमीटर से अधिक सफर 5 से 6 घंटे में तय कर पहुंचे थे। हुज़ूर अनवर का ख़ुत्बा जुम्अ: एम. टी. ए इंटरनेशनल द्वारा दुनिया भर में सीधा प्रसारण हो रहा था और विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी लाइव प्रसारित हो रहे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ डेढ़ बजे बैयतुस्सबूह से रवाना हुए और आधे घंटे के सफर के बाद दो बजे यहां पहुंचे और मर्दाना मार्की में तशरीफ लाकर ख़ुत्बा जुम्अ: इर्शाद फरमाया। (ख़ुत्बा जुम्अ: का पूरा पाठ अखबार बद्र 18 मई 2017 में प्रकाशित हो चुका है) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़ुत्बा जुम्अ: तीन बजकर दस मिनट तक जारी रहा। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह जुम्अ: की नमाज़ और नमाज़ अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर ने तीन मरहूमीन की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

यहाँ से रबाना हुए और 4 बजे वापस बैयतुस्सबूह तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

फैमली मुलाकात

कार्यक्रम के अनुसार साढ़े छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर आए और परिवारों की मुलाक़ात शुरू होई। आज शाम इस सत्र में 38 परिवारों के 152 लोगों ने अपने प्यारे हुज़ूर से मिलने का सौभाग्य हासिल किया। प्रत्येक परिवार ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटे बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान किए। आज मुलाकात करने वाले परिवार और दोस्त जर्मनी की 34 विभिन्न जमाअतों और क्षेत्रों से लंबा सफर तय करके आए थे। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम आठ बजकर बीस मिनट तक जारी रहा।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब और इशा अदा करने के लिए पधारे। नमाज़ पढ़ने से पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने आदरणीय मुहम्मद अशरफ शाहिद साहिब रंधावा आफ Augsberg जर्मनी की नमाज़े जनाज़ा हाज़िर और आदरणीय मुहम्मद मोमिन शहज़ाद साहिब आफ Stade जर्मनी और सुश्री बुशरा इफ्फत साहिबा आफ ग्रीन टाउन लाहौर की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाई।

*आदरणीय मुहम्मद अशरफ शाहिद साहिब ने दिनांक 11 अप्रैल दिन मंगलवार जर्मनी शहर Augsburg में 45 साल की उम्र में वफात पाई । इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। स्वर्गीय पिछले दस महीने से इस जमाअत में रहते थे और यहां मस्जिद निर्माण के दौरान नियमित वकारे अमल के लिए आते रहे। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में विधवा के अतिरिक्त दो बेटियां और एक बेटा है।

*आदरणीय मुहम्मद मोमिन शहज़ाद साहिब दिनांक 22 मार्च 2017 ई को लंबी बीमारी के बाद अल्लाह तआला के आदेश से वफ़ात पा। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। स्वर्गीय पिछले पांच साल से जर्मनी में रहते थे। आप का घर मस्जिद से लगभग 5 कलोमीटर दूर था इसके बावजूद आप सर्दियों में भी सुबह की नमाज़ अदा करने के लिए साइकिल पर मस्जिद आते थे। चंदों में नियमित थे। अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले देर तक अपना चंदा वसीयत अदा कर दिया था।

*आदरणीयह बुशरा इफ्फत साहिबा ने दिनांक 8 अप्रैल 2017 ई को ग्रीन टाउन लाहौर में 72 साल की उम्र में वफात पाई गया। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूमा के बेटे शाहिद महमूद पडहार साहिब उप कायद उमूमी मजलिस अंसारुल्लाह जर्मनी हैं। मरहूमा मूसिया थीं। मरहूमा के पीछे रहने वालों में तीन बेटे और एक बेटी है। नमाज़ जनाज़ा अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद में तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

15 अप्रैल 2017 (शनिवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े पांच बजे तशरीफ लाकर नमाज़े फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर पधारे। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दफ्तर की डाक और ख़त और रिपोर्ट देखी और हुज़ूर अनवर दफ्तर के मामलों को नपिटाने में लीन रहे।

फैमली मुलाकातें

सवा ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अजीज अपने दफ्तर आए और कार्यक्रम के अनुसार परिवारों की मुलाक़ात शुरू हुई। आज सुबह इस सत्र में 39 परिवारों के 141 लोगों ने अपने प्यारे हुज़ूर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों चॉकलेट प्रदान किए। आज मुलाक़ात करने वालों में जर्मनी की 26 विभिन्न जमाअतों से आने वाले दोस्त और परिवार शामिल थे। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम 1 बजकर 40 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज़ कुछ समय के लिए विभाग महासचिव जमाअत जर्मनी के दफ्तर में तशरीफ ले गए और आदरणीय अमीर साहिब जर्मनी और राष्ट्रीय महासचिव साहिब जमाअत जर्मनी को आगले आने वाले जुम्अ: की बेहतर व्यवस्था के संदर्भ में कुछ निर्देश दिए। हुज़ूर अनवर ने निर्देश देते हुए कहा कि कल के जुम्अ: में जो कमियां और दोष रह गए हैं उसके संदर्भ में अगले जुम्अ: के लिए बेहतर तैयारी होनी चाहिए और इस विषय में सोचें और बेहतर योजना करें कि कैसे आने वाले जुम्अ: के लिए बेहतर व्यवस्था हो ताकि लोगों का जुम्अ: बर्बाद न हो। अगर अपने व्यवस्था के अनुसार संख्या निर्धारित करनी है कि इससे बढ़कर लोग न आएं तो पहले से ही क्षेत्र और दूरी निर्धारित कर दें कि इतनी दूरी तक इन इन क्षेत्रों और जमाअतों के लोग जुम्अ: अदा के लिए आए इससे दूर के क्षेत्रों के लोग न आएं और वह स्थानीय रूप में ही जुम्अ: अदा करें। इसकी सूचनाएं पहले से ही सबको होनी चाहिए। हुज़ूर अनवर ने निर्देश देते हुए फरमाया कि जिन तीन हज़ार लोगों को वापस जाना पड़ा है और वह जुम्अ: की नमाज अदा नहीं कर सके और उन का जुम्अ: बर्बाद हुआ है उन सब लोगों से तुरंत क्षमा मांगें। आपके द्वारा उन्हें माफी का सन्देश जाना चाहिए। बाद में दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़े ज़ुहर और असर पढ़ाई। नमाज़ों को अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास में पधारे।

पाकिस्तान से आए दोस्तों तथा स्त्रियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह से मुलाकात

आज पिछले पहर कार्यक्रम के अनुसार पाकिस्तान से आने वाले उन दोस्तों की हुज़ूर अनवर से मुलाकात की व्यवस्था की गई थी जो पिछले एक साल के दौरान पाकिस्तान से यहाँ पहुँचे थे। पुरुषों और महिलाओं के अलग अलग समूह मुलाक़ात थी। मर्दों की संख्या सात सौ से अधिक थी। उनकी मुलाकात का प्रबंधन स्पोर्ट्स हॉल में किया गया था। प्रोग्राम के अनुसार सवा छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ स्पोर्ट्स हॉल में आए। हुज़ूर अनवर ने पूछा कि क्या आप सभी पिछले एक साल में पाकिस्तान से आए हैं। इस पर सभी ने अपने हाथ खड़े किए। फिर हुज़ूर अनवर के पूछने पर कि कितनों के असाईलम के मामले पास हो चुके हैं, एक सीमित संख्या ने अपने हाथ खड़े किए। ये सभी वे लोग थे जो अपने जीवन में पहली बार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अज़ीज से मुलाकात का सौभाग्य पा रहे थे।

* हुज़ूर अनवर की अनुमति से लाहौर से आने वाले एक दोस्त ने निवेदन किया कि पहले हम हुज़ूर को T.V पर देखते थे आज अपने आक़ा को अपने सामने देखकर बेहद ख़ुशी हुई है। इतनी अधिक ख़ुशी है कि मैं बयान नहीं कर सकता।

*एक और युवक ने निवेदन किया कि मैं 6 मई 2016 ई को लाहौर से यहां पहुंचा हूं पहली बार हुज़ूर अनवर से मिलकर बहुत ख़ुशी है। मेरा केस अभी पास नहीं हुआ। मेरे लिए दुआ करें। इस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

*नारोवाल से आने वाले एक युवक ने बताया कि दो साल पहले अहमदी हुआ हूँ। मेरी चार साल की बेटी पाकिस्तान में है। इसके लिए दुआ करें। हुज़ूर अनवर ने महोदय से पूछा कहा कि कैसे अहमदी हुए हैं? तो इस पर आप ने बताया कि में पत्रकार था। मैं बड़ा सोच-समझकर अहमदी हुआ हूँ। आज ख़िलाफत के बिना कुछ भी नहीं है।

*डसका से आने वाले एक साहिब ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ का अनुरोध किया कि मेरे परिवार और बच्चों के लिए दुआ करें। सब पीछे हैं। यहाँ मेरी प्रोटोकोल गई है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल करे।

* गुजरांवाला से आने वाले एक युवक ने निवेदन किया कि माँ को हार्ट अटैक हुआ है, उनके लिए विशेष दुआ करें। उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया: अल्लाह तआला कृपा करे।

*गोजरह से आने वाले एक युवक ने अपने पिता के स्वास्थ्य के लिए दुआ का अनुरोध किया तो उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: अल्लाह तआला कृपा करे।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनसरेहिल अजीज ने उन सभी दोस्तों से पूछा कि आप ने जुम्अ: कहाँ पढ़ा तो उस पर सबने अपना हाथ खड़ा करके बताया कि हमने Raunheim में (जहां हुज़ूर अनवर ने जुम्अ: की नमाज पढ़ाई थी) जुम्अ: पढ़ा था। हम सब वहाँ शामिल हुए थे।

*सरगोधा से आने वाले एक दोस्त ने निवेदन किया कि मेरा परिवार पाकिस्तान में है। मेरी बेटी ने पाकिस्तान से हुज़ूर अनवर को सलाम भेजा है। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया वअलैकुम अस्सलाम।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 2019-2017/45- Vol. 2 Thursday 24 Aug 2017 Issue No. 34

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 300/- Per Issue: Rs. 6/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

*एक युवक ने बताया कि मैं अदरहमह ज़िला सरगोधा से हूँ। उस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि वहाँ कोई रह गया है या सारे आ गए हैं? महोदय ने निवेदन किया कि पाकिस्तान में तो हमें तब्लीग़ का मौका नहीं मिलता था। यहाँ हम स्वतंत्रता से तब्लीग़ करते हैं। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया वहाँ पर मार खाने के मौका मिलता है।

*एक दोस्त ने निवेदन किया कि लाहौर से आया हूँ। यहाँ एक दोस्त को तब्लीग़ कर रहा हूं। दुआ करें कि वह जल्द बैअत कर लें।

*एक युवक ने निवेदन किया कि मैं हुज़ूर अनवर सेवा में केवल सलाम करना है ताकि बाक़ियों को भी बात करने का मौका मिल जाएगा। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: व अलैकुम अस्सलाम।

*एक दोस्त ने निवेदन किया कि मैं लाहौर से हूँ और अपने परिवार में अकेला अहमदी हूँ। मैंने 2012 ई में बैअत की थी। माँ अहमदी थीं। बाकी ग़ैर अहमदी थे। छह भाई बहन हैं। माँ की मृत्यु के बाद कठिनाइयां बढ़ी हैं मुझे बाहर निकलना पड़ा।

*एक दोस्त ने निवेदन किया कि हमारे लिए दुआ करें कि हमारी यह हिजरत करना धार्मिक और सांसारिक रूप से बरकत वाला हो। उस पर हुज़ूर अनवर ने फरमाया: मूल यही है कि धर्म का ध्यान हो। यह न हो कि यहां आए और धर्म को भूल गए। धर्म को याद रखें।

बाद में उन सभी दोस्तों ने जिनकी संख्या सौ से अधिक थी अपने प्यारे हुज़ूर से हाथ मिलाने का सौभाग्य हासिल किया, बारी बारी प्रत्येक ने हाथ मिलाया और अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने करूणा से उनसे बातचीत भी की। प्रत्येक ने हज़ूर अनवर की सेवा में सलाम निवेदन किया और अपना मुद्दा वर्णित किया। पाकिस्तान से आने वाले उन दोस्तों और युवाओं में से कुछ बहुत असहाय और लाचार हालत में कष्ट उठाकर यहां पहुंचे थे और अपने ही देश में अपने ही देशवासियों के अत्याचार से सताए हुए थे। प्यारे आक़ा से मिलना उनके लिए दिल के लिए बहुत संतोष का कारण बना। जहां उन्हें दिल की संतुष्टि नसीब हुई वहाँ उनके शोक दूर हुए। अपने प्यारे हुज़ूर से मुलाकात के बाद जहां उनके चेहरे पर मुस्कान थी वहाँ कुछ की आंखें नम थीं और रो रही थीं। उनके जीवन में पहली बार यह मुबारक और बरकतों वाले क्षण आए कि अपने आक़ा की नज़दीकी नसीब हुई और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और यह मुबारक क्षण उनके लिए अमृत बन गए। एक दोस्त कहने लगे कि आज जीवन का उद्देश्य पूरा हो गया।

एक दोस्त ने कहा कि इस समय जो मेरे भावनाएं हैं मैं वर्णन नहीं कर सकता। एक युवक ने कहा आज मेरे जीवन का सब से सुन्दर दिन है मैंने हुज़ूर को बेहद करीब से देखा और हाथ मिलाया। अत: प्रत्येक की अपनी अपनी भावनाएं थी जिस की अभिव्यक्ति उनकी रोती हुई आँखों से हो रही थी।

मर्दों के साथ मुलाकात का यह कार्यक्रम सवा सात बजे तक जारी रहा। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लजना हॉल में पधारे जहां 32 महिलाओं के एक समूह ने अपने प्यारे हुज़ूर से मलाकात का सौभाग्य पाया। ये महिलाएं थीं जो पिछले एक साल के दौरान जर्मनी पहुंची थीं और पहली बार हुज़ूर अनवर से मिलने का सौभाग्य पा रहीं थीं। हुज़ूर अनवर ने करूणा से उनसे बातचीत फ़रमाई।

फैमली मुलाकातें

उसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ्तर पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार परिवारों की मुलाक़ातें शुरू होईं। इस कार्यक्रम में 15 परिवारों के 50 लोगों को हुज़ूर अनवर से मुलाकात का सौभाग्य मिला। प्रत्येक ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने करूणा से शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट दीं। मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा।

आमीन का समारोह

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद में पधारे। जहां आमीन का समारोह शुरू हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्न 30 बच्चों और बच्चियों से कुरआन की एक एक आयत सुनी और अंत में दुआ करवाई।

प्रिय जरबन नवीद, मिर्ज़ा शऊर अहमद, साईम अहमद, फैज़ान खान, कामरान असद, फ़राज़ अली, राणा कदीम अहमद, सलमान शाह, साहिल मजीद, फ़ारस हसन, फिरोज़ ख़ान, आतिफ अहमद, दानिश अहमद मिर्ज़ा, मलिक तलहा अहमद,

प्रिया दा अहमद, निहाल मलिक, नाइला संधू, नाईमा संधू, दानिया उरवह इमरान, अलीशा अहमद, अलीना अहमद आतकह अहमद, हमदी अहमद, सबा नईम, शमा हिबतुल बसीत, हिबतुल काफी ख़ान, मुस्कान ख़ालिद महमूद भट्टी, अतियतुल मतीन, अलीनह ख्वाजा, अतयतुल ख़बीर ख़ान।

आमीन के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिब और इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ पढ़ने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने निवास पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष............)

☆ ☆ ☆

हमारा ख़ुदा

कलाम हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ियल्लाहो अन्हो जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा

(आपने विशेष रूप से अहमदी बच्चों को याद करने के लिए यह नज़्म लिखी थी)

मेरी रात दिन बस यही इक दुआ है — कि इस आलमे-कौन का इक ख़ुदा है।
उसी ने है पैदा किया इस जहाँ को, — सितारों को सूरज को और आसमां को।
वह है एक उसका नहीं कोई हमसर — वह मालिक है सबका वह हाकिम है सब पर।
हर इक शै को रोज़ी वह देता है हर दम, — ख़ज़ाने कभी उसके होते नहीं कम।
वह ज़िन्दा है और ज़िन्दगी बख़्शता है, — वह क़ायम है हर एक का आसरा है।
कोई शै नज़र से नहीं उसके मख़्फ़ी, — बड़ी से बड़ी हो कि छोटी से छोटी।
दिलों की छुपी बात भी जानता है, — बुरे और नेकों को पहचानता है।
वह देता है बन्दों को अपने हिदायत, — दिखाता है हाथों पे उनकी करामत।
है फरियाद मज़लूम की सुनने वाला, — सदाक़त का करता है वो बोल बाला।
गुनाहों को बख़्शिश से है ढांप देता, — ग़रीबों को रहमत से है थाम लेता।
यही रात दिन अब तो मेरी सदा है, — ये मेरा ख़ुदा है, ये मेरा ख़ुदा है।

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad